10880
2017

मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-1
(प्रश्न पत्र-1)

DTVF / OPT-23 **M1-HL1**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): भानु प्रताप सिंह

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 20-07-2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	2	1	3	1	8	5

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 149½

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)
E-51

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)
R-11

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

सारे उत्तर अच्छे हैं।
लेखन-शैली अच्छी है।
भूमिका-निष्कर्ष अच्छे हैं।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

दृष्टि The Vision

…या इस स्थान में प्रश्न …या के अतिरिक्त कुछ …लिखें। …lease do not write …ything except the …estion number in …is space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

अमीर खुसरो अपने व्यक्तित्व में 'इतिहासकार' 'संगीतकार' तथा 'साहित्यकार' जैसी विविध क्षमताओं से युक्त हैं। उनका समय 13-14 वीं सदी का है पर उनके साहित्य में कहीं-कहीं वैसी ही खड़ी बोली प्रयुक्त हुयी है जैसा स्वरूप वह आज लिए है।

खुसरो के यहाँ खड़ी बोली मुख्यतः 'पहेलियों', 'मुकरियों' और 'दो सुखनों' आदि में प्रयुक्त हुयी है। उदाहरणार्थ

"एक थाल मोती से भरा सबके सर औंधा धरा
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे"

उपर्युक्त पहेली में खड़ी बोली

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अपने शुद्धतम व्याकरणिक व शाब्दिक रूप में प्रयुक्त हुयी है।

खुसरो की खड़ी बोली कहीं-कहीं अरबी फारसी पन से भी युक्त है ~~[illegible]~~ - और कहीं कहीं खड़ीबोली, ब्रजभाषा ~~और~~ अरबी फारसी शब्दों के साथ प्रयुक्त किए गये हैं। उदाहरण के लिए।

" खुसरो यह घर प्रेम का जाला का घर नाहीं"

(ब्रजभाषा + खड़ी बोली)

तथा

" मेरा मोरे सिंगार करावत आगे बैठ के मान बढ़ावत "

और " जेहाल मिस्की मकुन तगाफुल
दुराय नैना, बनाय बतियाँ "

स्पष्ट है कि खुसरो ने खड़ीबोली का ऐसा प्रयोग किया है कि आचार्य शुक्ल भी विस्मृत होकर पूछते हैं - क्या भाषा तब घिसकर इतनी चिकनी हो गयी थी "

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तिलक उन प्रथम स्वतन्त्रता आंदोलन नेतृत्वकर्ताओं में से हैं जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा मानकर उसे पूरे भारत को जोड़ने का माध्यम बनाया।

तिलक का स्पष्ट मानना था कि भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है। उन्होंने हिन्दी में 'हिंदीकेसरी' पत्र निकाला। तिलक ने हिंदी की टाइपिंग की चुनौतियों से निपटने के लिए 'तिलक फाण्ट' नाम से 'फाण्ट' तैयार किए जिससे हिंदी की टाइपिंग सुविधाओं का विस्तार हुआ।

तिलक ने राष्ट्र में स्वतन्त्रता और आत्मसम्मान के संचार के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिंदी के पक्ष में मज़बूत आंदोलन चलाया। उन्होंने ~~[illegible]~~ कई संस्थाओं की स्थापना की तथा राष्ट्रभाषा हिंदी के अध्यापन, अध्ययन में

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वैचारिक व संसाधनों के स्तर पर सहयोग किया।

समग्रत: बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रभाषा हिंदी को स्वतन्त्रता आंदोलन से जोड़ने का जो प्रयास किया उसी के कारण आगे के स्वतन्त्रता आंदोलन में नेताओं ने एकसुर में हिंदी का राष्ट्रभाषा के रूप में पक्ष-समर्थन किया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में 'पुरुषोत्तम दास टण्डन' जी का अप्रतिम योगदान है। टन्डन जी का स्पष्टत: मानना है कि - " मैं हिन्दी के प्रचार, राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार को राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ "

पुरुषोत्तम दास जी के हिन्दी प्रेम और हिंदी को बढ़ावा देने उसके प्रचार-प्रसार व संरक्षण के प्रयासों के कारण उन्हें 'हिन्दी का प्रहरी' नाम के लोकप्रिय संज्ञा से जाना जाता है।

इन्होंने 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जिसकी परीक्षाओं में बैठकर लाखों विद्यार्थी राष्ट्रभाषा हिंदी सीखने में सक्षम हुए।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'टण्डन' जी ने ही महात्मा गांधी को 'हिंदी साहित्य सम्मेलन से जोड़ने का सफल प्रयास किया जिसके बाद महात्मा गांधी जी ने राष्ट्रभाषा के प्रचार को स्वतंत्रता आंदोलन के समानान्तर गति दी और उसे राष्ट्रीय स्वरूप दिया।

टण्डन जी ने 'लाला लाजपत राय' जी के साथ जुड़कर 'लोकसेवा मण्डल' की स्थापना की और हिन्दी की अभूतपूर्व सेवा की। उनकी प्रेरणा से ही विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों ने भी अपने पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी भाषा में निकाले और हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रसारित किया।

निष्कर्षतः पुरुषोत्तम दास जी का हिंदी के विकास में अप्रतिम महत्त्व है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

रहीम अकबर के दरबारी सहयोगी तथा विश्वसनीय सेनापति थे पर उनकी मूल पहचान 'कृष्ण भक्त' के रूप में है।

इसी क्रम में उनके 'भक्ति', 'नीति' तथा 'सामाजिक चिंतन' संबंधी 'पदों' में हिंदी 'खड़ी बोली हिंदी' का प्रयोग हुआ है।

रहीम की 'मदनाष्टक' रचना में तो खड़ी बोली का वैसा ही रूप मिलता है जैसा वह आज लिए है। उदाहरणार्थ -

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून
पानी बिन न उबरे, मोती मानुष चून"

इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण में रहीम 'नरन', 'सों' जैसे 'पूर्वी' प्रयोगों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को छोड़कर सम्पूर्ण शब्दावली खड़ी बोली हिंदी से प्रभावित है। यथा -

"रहिमन ओछे नरन सों, बैर भली न प्रीति
काटे चाटे स्वान के, दोहुँ भाँति विपरीति"

समग्रतः रहीम के प्रयोगधर्मी व्यक्तित्व और भाषायी प्रयोगशीलता के कारण 'खड़ी बोली' के विकास और इतिहास में उनका महत्तम स्थान है।

6
10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) 'मारवाड़ी' बोली

मारवाड़ी राजस्थानी हिन्दी उपवर्ग की प्रमुख बोली है। यह राजस्थानी हिंदी की सर्वाधिक बोली जाने वाली बोली है जिसका प्रयोग क्षेत्र 'मारवाड़' का है जिसमें आज के 'जोधपुर', 'जैसलमेर', 'बीकानेर' आदि जिले आते हैं।

मारवाड़ी राजस्थानी हिंदी की सर्वाधिक साहित्य सम्पन्न बोली है। मारवाड़ी भाषी लोग प्रायः भारत के प्रमुख नगरों में और सम्पन्न को से हैं जिससे मारवाड़ी के साहित्यिक-सांस्कृतिक विकास को आधार मिला है।

मारवाड़ी की भाषिक विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं।

1. महाप्राण ध्वनियों के अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति। उदाहरणार्थ

हाथ → हाथ

दूध → दूद

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. मूर्धन्य 'ळ' अथवा मराठी 'ळ' का प्रयोग
उदा॰ - बालक → बाळक
जल → जळ

3. 'न' की जगह मारवाड़ी में (ण) का प्रयोग मिलता है। यथा पानी → पाणी
चलना → चलणा

4. 'ओकारान्तता' की प्रवृत्ति मिलती है।
आगे, चलो, गयो

5. मारवाणी के प्रमुख सर्वनामों में 'म्हारो' 'थारो', 'म्हारी', 'कुण', 'जिण' इत्यादि प्रचलित हैं।

6 / 10

दृष्टि The Vision

2. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महात्मा गांधी ने भारत की राजनीतिक स्वतन्त्रता और सांस्कृतिक स्वतन्त्रता का आंदोलन साथ-साथ चलाया। ~~वे~~ उन्होंने राजनीतिक के साथ भाषायी स्वतन्त्रता को समान महत्त्व दिया। ~~उनका~~ वे हिंदी के राष्ट्रभाषा होने के पक्षधर थे इसलिए उनका मानना था कि- "हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है"

भारत आगमन के ~~साथ~~ तुरंत बाद ही काशी नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दू विश्वविद्यालय काशी (1916) के आख्यानों में उन्होंने स्पष्टत: हिंदी का महत्त्व स्थापित किया।

1917 में गुजरात शिक्षा परिषद के सभापतित्व के साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत की राष्ट्रभाषा के निम्न लक्षण / विशेषताएँ

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

होनी चाहिए। यथा

→ वह सरल हो। आसान हो।

→ भारतवर्ष के अधिकांश लोग उसे समझते हों।

→ उसमें भारतवर्ष के आपसी धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवहार निभ सकें।

→ गांधी जी ने स्पष्ट किया कि इनमें से एक भी गुण अंग्रेजी में नहीं है जबकि ये सभी गुण हिन्दी में हैं।

सन 1918 के हिन्दी साहित्य सम्मेलन इन्दौर के अधिवेशन में गांधी जी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आह्वान किया और कहा कि-" यदि स्वराज भारत के कुछ अंग्रेजी बोलने वालों के लिए है तो निश्चित ही अंग्रेजी भारत की राष्ट्रभाषा होगी। पर स्वराज्य भारत के गरीब, साधारण आदमी का है और निश्चित ही उनकी भाषा हिन्दी है"

गांधी जी के समर्थन ने 'हिन्दी प्रचार-प्रसार आंदोलन को नयी शक्ति दी। उन्होंने कहा कि हिन्दी के बिना हमारा स्वराज्य निरर्थक है। गांधी जी ने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया। परिणामस्वरूप 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति' की स्थापना हुयी।

दक्षिण में हिंदी के प्रचार के लिए उन्होंने स्वयं अपने पुत्र को भेजा। उन्हीं के प्रयासों से 'वर्धा' और 'मद्रास' में राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएँ आयोजित हुयी और 'हिंदी असमिया साहित्य परिषद', उड़ीसा में 'हिंदी शिक्षण मन्दिर', 'गुजरात विद्यापीठ' आदि की स्थापना हुयी। और कांग्रेस ने अपना कार्य 'हिन्दी में करने का प्रस्ताव पास किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

समग्रत: महात्मा गांधी का जितना योगदान स्वतन्त्रता आंदोलन और राष्ट्रनिर्माण में है उतना ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

मानक हिंदी में दो वचन हैं – 'एकवचन' और 'बहुवचन'। जबकि हिंदी की जननी में तीन वचन थे। वस्तुत: हिंदी की वचन संरचना किसी तार्किक वैज्ञानिक चिंतन की जगह लोक प्रयोगों से विकसित हुयी है।

हिंदी की वचन-संरचना की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं।

(क) पुल्लिंग शब्दों की वचन संरचना:

पुल्लिंग शब्द 'आकारान्त' – बहुवचन में एकारान्त हो जाते हैं। उदा०–

लड़का → लड़के।

इसके अलावा अधिकांश पुल्लिंग शब्दों में वचन परिवर्तन क्रिया व सर्वनाम परिवर्तन से ही समझ में आता है। जैसे।

यह उसका कपड़ा है (एकवचन)
ये उसके कपड़े हैं (बहुवचन)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्त्रीलिंग शब्दों की वचन संरचना : स्त्रीलिंग शब्दों में वचन परिवर्तन प्राय: निम्न प्रकार होता है।

- 'ईकारान्त' शब्द 'इयाँ' से युक्त हो जाते हैं
  नदी → नदियाँ , लड़की → लड़कियाँ
- 'इकारान्त' शब्द 'याँ' से - उदा०
  नीति → नीतियाँ।
- अकारान्त शब्दों में 'अ' का 'एं' हो जाना।
  बहन → बहनें।

(ग) अन्य विशेषताएँ :

- कुछ शब्द हमेशा बहुवचन के सन्दर्भ में ही प्रयुक्त होते हैं - जैसे - होश, आँसू "दर्शन" आदि
- कुछ शब्द हमेशा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे - जनता, आग, वर्षा आदि।
- आदरसूचक शब्दों में बहुवचन के नियम प्रयुक्त होते हैं। ~~जैसे~~ -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) तुलना हिंदी में संस्कृत की तरह ही वचन परिवर्तन के साथ क्रिया परिवर्तन होता है जबकि अंग्रेजी में नहीं होता। उदाहरणार्थ -

हिन्दी	संस्कृत	अंग्रेजी
वह जाता है	स: गच्छति	I was going
~~वह जाते हैं~~ वे जाते हैं।	सा गच्छति	we were going

Good 9/15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कबीरेतर संतकवियों के साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वरूप का विवेचन कीजिए। 15

संत साहित्य की भाषा को 'संध्या भाषा' या 'पंचमेल खिचड़ी' कहते हैं अर्थात् ऐसी भाषा जो कई स्थानों की भाषा के संयोग से बनी हो। इसी सन्दर्भ में संत साहित्य में 'खड़ी बोली हिंदी' के आरंभिक स्वरूप के सूत्र मिलते हैं।

कबीरेत्तर संत साहित्य में प्रारंभिक संतों जैसे 'रहीम', 'मीरा' आदि में 'पूर्वी' और राजस्थानी के प्रभाव अधिक दिखते हैं। जैसे -

"गिरधर म्हारो साँचो प्रीतम
देखत रूप लुभाऊँ" (मीरा)

"रहिमन पानी 'राखिये', 'बिन' पानी सब 'सून'"
(रहीम)

पर उत्तरार्ध के संत कवियों के यहाँ खड़ी बोली अधिक स्पष्ट और विकसित रूप में मिलती है। कुछ स्थानों पर तो वह आधुनिक

खड़ी बोली के समान 'शाब्दिक' और व्याकरणिक विशेषताओं से युक्त है।

उदाहरण के लिए 'मलूकदास (17वीं सदी) का निम्न दोहा आधुनिक खड़ी बोली से साम्य रखता है।

"अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम
दास मलूका कह गये सबके दाता राम"

इस उदाहरण का सम्पूर्ण व्याकरणिक आधार निस्सन्देह खड़ी बोली का है। साथ ही 'अजगर', 'काम', 'कह गये' जैसे शब्द और 'सबके' में 'के' कारक का प्रयोग भी खड़ी बोली का प्रभाव लिए है।

इसी तरह रीतिकाल में दरिया साहब, पलटू साहब इत्यादि संत कवियों की भाषा वर्तमान खड़ी बोली से समानताएँ रखती है। उदाहरणार्थ -

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"जात हमारी ब्रह्म है, मात पिता हैं राम
गृह हमारा सुन्न में, अनहद में विसराम"

समग्रत: हम कह सकते हैं कि खड़ी बोली आज जिस वैज्ञानिक व्याकरणिक व शाब्दिक आधार पर खड़ी है। उसके निर्माण में संत साहित्य की अविस्मरणीय भूमिका रही है।

3. (क) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक हिन्दी का समय 12-14 वीं सदी के आसपास का है। इसका विकास संस्कृत से पाली प्राकृत - अपभ्रंश - अवहट्ट की परंपरा से हुआ है। इसलिए प्रारंभिक हिंदी अपनी परंपरा में कुछ जोड़ते और कुछ छोड़ते हुए विकसित हुयी। इसके अध्ययन के स्रोतों में विद्यापति की रचनाएँ, रासो ग्रंथ आदि हैं।

प्रारंभिक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं।

1. संज्ञा व कारक व्यवस्था:

संज्ञा के 'संविभक्तिक' रूप मिलने लगभग समाप्त हो गये और 'परसर्गों' का विकास काफ़ी तेज़ी से होने लगा। कर्ता के लिए ने, नै, कर्म के लिए को, कूं आदि परसर्ग इसी समय विकसित हुए।

कुछ विभक्तिक प्रयोग भी मिलते हैं।

जैसे 'हिं' विभक्ति से प्रायः सभी कारकों का काम लिया जाता था। उदाहरणार्थ -

"राजा गरबहिं बोले नाहिं।

2. सर्वनाम व्यवस्था : पुरानी हिंदी में सर्वनाम अपभ्रंश, अवहट्ट की तुलना में अधिक विकसित हुए। कुछ प्रमुख सर्वनाम इस प्रकार हैं।

उत्तम पु॰ → मैं, मोर, हम, हमार, हमारो

मध्यम पु॰ → तूँ, तुम्ह, तोहि, तोर, तुम्हारा

अन्य पु॰ → उन्ह, सो, सेई, वैं। वे।

3. लिंग व वचन व्यवस्था :

संस्कृत से अपभ्रंश के विकास में ही लिंग और वचन दोनों दो, दो हो गये थे। पुरानी हिंदी में एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम कुछ-कुछ स्पष्ट होने लगे जैसे - 'आकारान्त' पुल्लिंग शब्द बहुवचन में 'अन' प्रत्यय जोड़कर 'एकारान्त' हो जाते हैं। बेटा → बेटन

4. विशेषण व्यवस्था :

पुरानी हिंदी में विशेषण विकास जारी रहा. और संख्यावाचक विशेषण जैसे आठ, दस बीस विकसित हुए। साथ ही विशेषण संज्ञा के लिंग वचनानुसार विकसित होने लगे। उदाहरण :-

ऊँचा / ऊँचे / ऊँची / ऊँचो आदि।

5. क्रिया संरचना :

पुरानी हिंदी में संस्कृत की 'तिङंत परंपरा' की जगह कृदंत परंपरा की अधिकता है इसके अलावा संज्ञार्थ क्रियाओं या क्रियार्थ संज्ञाओं में 'न', 'नु' लगाने की प्रवृत्ति मिलती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पुरानी हिन्दी में देशज शब्द भण्डार काफी ज्यादा है। और विदेशज शब्द फारसी और अरबी परंपरा से आने लगे हैं।

(ख) हिंदी की क्रिया-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

किसी वाक्य में क्रिया व्यवस्था कुछ करना या 'होना' सूचित करती है। यह विकारी पद है। भाषा वैज्ञानिक मानते हैं कि कोई भी स्वतंत्र वाक्य 'क्रिया' के अभाव में नहीं हो सकता।

- हिन्दी में क्रिया-व्यवस्था
  - अकर्मक सकर्मक क्रिया
  - संयुक्त क्रिया
  - समापिका व असमापिका क्रिया
  - प्रेरणार्थक व नामधातु क्रिया।

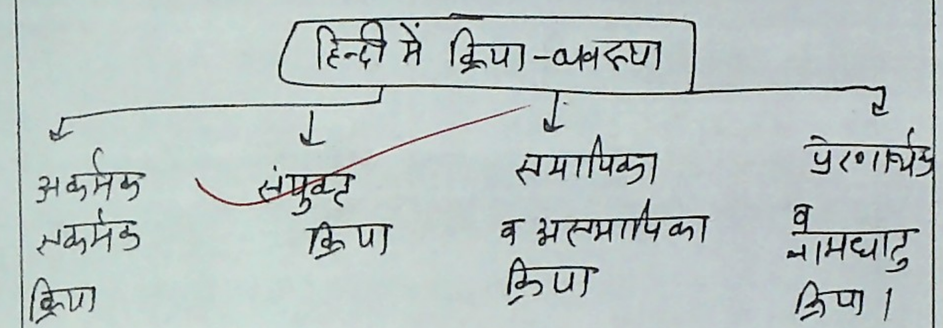

1. **अकर्मक व सकर्मक:** अकर्मक क्रियाएँ बिना किसी कर्म की अपेक्षा के होती हैं। जैसे 'राम हँसा', 'पक्षी उड़े'। जबकि सकर्मक क्रिया में कर्म की अपेक्षा होती है। जैसे - राम ने खाना खाया।

2. **संयुक्त क्रिया:** जिन वाक्यों में एक से अधिक क्रियाएँ हो वहाँ संयुक्त क्रिया होती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है। संयुक्त क्रिया के पुनः निम्न भेद हैं।

संयुक्त क्रिया
- मुख्यक्रिया
- संयोजी क्रिया
- रंजक क्रिया
- सहायक क्रिया।

उदाहरणार्थ - "राम तेजी से चलता जा रहा है" में - 'चलना' मुख्य क्रिया है, 'जा रहा' संयोजी क्रिया है और 'है' - सहायक क्रिया है।

उदा॰ "चलता है" या 'फेंक देना' - रंजक क्रिया है।

3. समापिका व असमापिका क्रिया.

समापिका क्रिया वाक्य को समाप्त करती है। जैसे - रूप न्यूपर्क जाएगा में 'जाएगा'

असमापिका क्रिया अंतिम हिस्से की जगह कहीं और प्रयुक्त होती है - उदा॰ तुमने कहा है कि मैं यहाँ हूँ में 'कहा है'।

4. प्रेरणार्थक व नामधातु : प्रेरणार्थक क्रियाओं में कार्य प्रेरणा

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से होता है - जैसे - उठवाया, मरवाना।

- संज्ञा या विशेषण के रूप परिवर्तन से नामधातु क्रियाएँ बनती हैं। उदाहरण -

हाथ → हथियाना

क्रिया में विकार: क्रिया में 'लिंग', 'वचन', 'काल', 'भाव', वाच्य और 'पुरुष' जैसे विकारी तत्वों के परिवर्तन से विकार उत्पन्न होता है।

जैसे - राम जाता है।
रीता जाती है।

इस वाक्य में 'जाता' की जगह 'जाती' लिंग परिवर्तन के कारण आया है।

Gr 9

सार: हिंदी की क्रिया संरचना काफी वस्तुनिष्ठ व वैज्ञानिक है। भाषा के मानकीकरण की सघनता बढ़ने के साथ यह और सरल हो जाएगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की हिन्दी मानकीकरण की प्रेरणा और आशीर्वाद से पण्डित कामताप्रसाद गुरु जी द्वारा निर्मित हिन्दी व्याकरण ने हिन्दी मानकीकरण की तमाम समस्याओं को दूर कर दिया था। लेकिन हिंदी के प्रयोग और ~~स्पष्टता~~ राष्ट्रीय विकास के साथ दो मूलभूत प्रश्न पुनः उठे।

पहला यह कि 1915-1950 के मध्य हिन्दी के मानकीकरण और विकास के बाद उसके व्याकरणिक सिद्धांतों को पुनः अद्यतन की आवश्यकता थी। दूसरा यह कि बाद के विद्वानों ने पण्डित कामताप्रसाद गुरु के व्याकरण की कुछ सीमाओं का उल्लेख

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किया था। इन्हीं कमियों को दूर करने का काम आचार्य किशोरीदास वाजपेयी जी ने किया।

इसी परिप्रेक्ष्य में 'नागरी प्रचारिणी सभा' द्वारा वाजपेयी जी का महान शोध से युक्त ग्रंथ 'हिन्दी शब्दानुशासन' प्रकाशित किया। यह कृति व्याकरण के सिद्धांतों और व्यवहारिक अनुप्रयोगों का समानान्तर विश्लेषण करती चलती है।

वाजपेयी जी ने संज्ञा, कारक, सर्वनामों, क्रिया संरचना, परसर्ग प्रयोग आदि पर नवीन दृष्टि से गंभीर विवेचन किया है।

उन्होंने हिन्दी की सभी बोलियों की आधारभूत एकसूत्रता की खोज की जो उनकी मौलिक विशेषता है।

अतः किशोरीदास वाजपेयी जी का हिन्दी के विकास और उसके

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मानक स्वरूप निर्धारण में महती भूमिका है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

सिद्धों का समय 9-11वीं सदी के आस-पास का है। सिद्धमत हीनयानी बौद्ध मत और कुछ शैव तत्वों के मिश्रण से विकसित हुआ। इन्हें वाममार्गी बौद्ध भी कहा जाता है।

सिद्धों ने 'सिद्ध' होने के लिए प्रवृत्तिमार्गी 'पंचमकार' साधनापद्धति का अनुसरण किया और असीम भोग से ब्रह्मोपलब्धि के मार्ग की स्थापना की। इन्होंने अपनी सांप्रदायिक मान्यताओं को मुख्यतः दोहों और चर्यापदों में अर्द्धमागधी भाषा में अभिव्यक्त किया। इसी सन्दर्भ में इनके यहाँ खड़ी बोली हिंदी के प्रारंभिक स्वरूप के सूत्र मिलते हैं - उदाहरणार्थ -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

"पण्डिय सअल सत्य बक्खाणअ
देहहिं बुद्ध बसन्त ण जाणअ"

इसी प्रकार - "जेहि मण पवन ण संचरई
रवि ससि णाह पवेस"

उपरोक्त चर्यापदों में 'ण' की जगह 'न' का प्रयोग तथा 'देहहिं' जैसे अनुस्वारात्मक प्रयोग खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप का एहसास कराते हैं।

Good 6

निष्कर्षतः खड़ी बोली के विकास में सिद्ध साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। पुनः 'सरहपा', 'लुइपा' व 'कण्हपा' जैसे सिद्धों की भाषा 'खड़ी बोली' के प्रभाव से युक्त है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

कन्नौजी बोली 'पश्चिमी हिंदी उपवर्ग' की प्रमुख बोली है। इसका प्रयोग क्षेत्र कन्नौज, फर्रुखाबाद, कानपुर देहात आदि के आस पास का क्षेत्र है।

कन्नौजी प्रवृत्तिगत दृष्टि से 'ब्रजभाषा' और खड़ी बोली के काफी नज़दीक है इसलिए इसे इनसे पृथक करना काफी जटिल है। यद्यपि 'ग्रियर्सन' प्रभृति विद्वानों ने कन्नौजी को भिन्न बोली माना है।

कन्नौजी की भाषिक विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं।

1. यह अपनी प्रवृत्ति में पुल्लिंग शब्दों में 'उकारान्तता' को धारण करती है। उदाहरणार्थ - 'रामु', 'किसानु'

2. ~~पुल्लिंग~~ ~~[illegible]~~ ~~शब्दों~~ अकारान्त शब्दों के 'ओकारान्तता' की प्रवृत्ति मिलती है। यथा- 'तुम्हारो', 'वाको' आदि।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3. अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति मिलती है.

बात → ~~[illegible]~~ बाँत।

4. कन्नौजी की एक विशेषता व्यंजन संयोग होना भी है। यथा-

थक गया → थक्यो

5. क्रियासंरचना में वर्तमान के लिए 'है', 'हैगो', 'होवै' तथा भूत के लिए 'हतो', 'हते', और भविष्य के लिए 'जौ', 'जौ', जायगो आदि जैसे ब्रजभाषा से प्रभावित प्रयोग मिलते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) विकारी और अविकारी पद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विकारी और अविकारी पद किसी वाक्य संरचना के ऐसे पद हैं जो विकारोत्पादक तत्वों (लिंग, वचन, काल, पुरुष, वाच्य व भाव) की उपस्थिति या परिवर्तन से प्रभावित होते हैं। उदाहरणार्थ

राम जाता है (पुल्लिंग)
सीता जाती है (स्त्रीलिंग)

इस वाक्य में 'जाता' की जगह 'जाती' लिंग परिवर्तन के कारण आया है।

हिन्दी के पद

- अविकारी पद
  - क्रिया विशेषण
  - संबंध बोधक
  - योजक
  - विस्मयादिबोधक
- विकारी पद
  - संज्ञा
  - सर्वनाम
  - विशेषण
  - क्रिया।

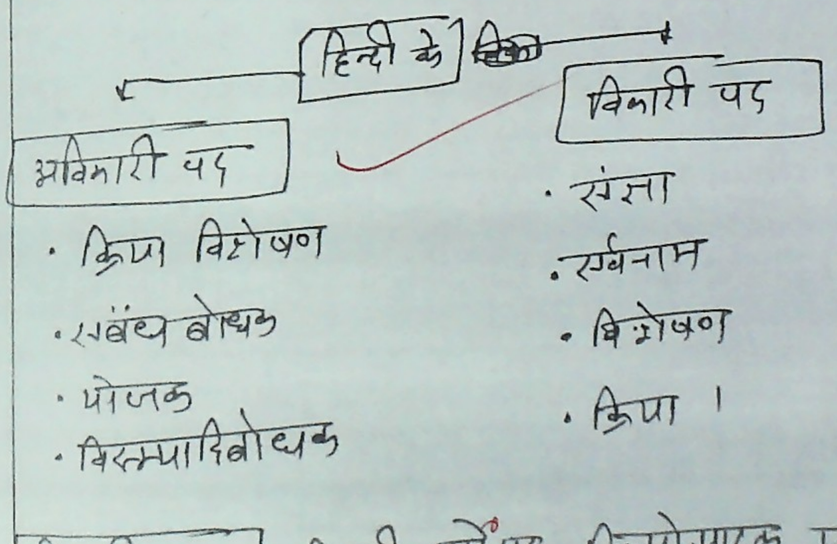

(1) विकारी पद — विकारी पदों पर विकारोत्पादक तत्वों का प्रभाव पड़ता है। ये निम्न हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

1. **संज्ञा** : संज्ञा किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान का नाम हो सकता है। यह पुनः व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक में वर्गीकृत होता है

2. **सर्वनाम** : सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के स्थानापन्न के रूप में होता है यथा- 'तुम', 'वह', 'वे'

3. **विशेषण** : यह संज्ञा की विशेषता बताता है।
   उदा० वह लंबा है - 'लंबा' विशेषण है।

4. **क्रिया** : क्रिया कुछ करना या होना इंगित करती है। यथा- मैंने खाना खाया में - 'खाया' पद

(5) **अविकारी पद** : इनपर विकारोत्पादक तत्वों का प्रभाव नहीं पड़ता। ये निम्न हैं;

1. **क्रिया विशेषण** : - धीरे चलना में 'धीरे'
2. **संबंध बोधक** : - यह मेरा भतीजा है - 'मेरा'
3. **योजक** : जो पढ़ेगा वही सफल होगा - 'वही'
4. **विस्मयादिबोधक** : अरे, वाह, इत्यादि।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताएँ

ब्रजभाषा पश्चिमी हिंदी उपवर्ग की प्रमुख बोली है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। ब्रजभाषा का प्रचलन क्षेत्र आगरा, मथुरा, ब्रज का है। सूरदास के पश्चात हिंदी क्षेत्र की प्रमुख काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा की प्रतिष्ठा रही है। इसकी व्याकरणिक विशेषताएँ निम्न हैं।

① **संज्ञा व कारक व्यवस्था** : संज्ञा का एक ही रूप मिलता है।

कुछ निर्विभक्तिक प्रयोग मिल जाते हैं -
उदा० सौंह करै 'भौंहनु' हँसै

प्रमुख कारक

कारक		परसर्ग
कर्ता	→	नैं
कर्म	→	को, 'कौं'
करण	→	तैं 'सौं' (उदा- सुनहु मधुप निर्गुन कंटक तैं। राजपंथ क्यों रूँधौं)
संबंध	→	'कौ', (के)

उदा० - तुम कौन (कौ) पाटी पढ़े हो लल्ला)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(2) सर्वनाम : एकवचन बहुवचन

प्रथम पु० → हउँ, मैं | हमैं, हमारो
मध्यम → तू, तैं | तुम, तुम्हारो, तुम्हरे
अन्य → वह, वाको | वे, वाको।

अन्य- संबंधवाचक - 'जाके', 'ताको'
प्रश्नवाचक → को, कौन (निर्गुण कौन देश को बासी)

उदा० ब्रजबासिन के नहीं काम कि तुम्हरे (हीं है ठोर)

(3) वचन संरचना: बहुवचन निर्माण के लिए

(1) अनुनासिक रूप के प्रयोग / उदा० 'आँ' → 'अखियाँ हरि दरसन की भूखी।'

→ 'न', 'अन' प्रत्यय → "ब्रजवासिन के नहीं काम की तुम्हरे ही है ठोर।"

(4) क्रिया संरचना:

वर्तमान के लिए 'त' रूप (निसि दिन बरसत नैन हमारे)
'भूत' के लिए 'कियौ', 'चलौ' जैसे रूप और भविष्य के लिए गा रूप मिलता है। उदा० 'अति कालि ही सी बढ्यौ', 'आगे कौन हवाल।'

(5) विशेषण: विशेषण विशेष्य के लिंग वचनानुसार परिवर्तनीय है - जैसे - काली डोरी → काले डोरो।

दृष्टि
The Vision

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'केलाग' हिन्दी व्याकरण लेखकों में महत्वपूर्ण हैं। इनके व्याकरण ग्रंथ की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं।

1. केलॉग ने हिंदी व उर्दू व्याकरण गठन में साम्य खोजा और व्याकरणिक विश्लेषण का आधार बनाया।
2. इन्होंने हिंदी की दो बहुप्रचलित बोलियों यथा 'ब्रजभाषा' और 'अवधी' का विशद विश्लेषण अपने ग्रंथ में किया है।
3. इन्होंने 'सिंध के पूर्व' और बंगाल के पश्चिम में प्रचलित अधिकांश बोलियों का परिचय दिया है जिससे किसी अपरिचित व्यक्ति को भी हिंदी की लगभग सभी बोलियों का परिचय इनके ग्रंथ से प्राप्त हो जाता है।
4. इन्होंने उदाहरणों की व्याकरणिक व साहित्यिक प्रामाणिकता का विशेष ध्यान रखा

उदाहरण चुनने में प्रायः लिखित पुस्तकों का ही सहारा लिया।

5. हिंदी की व्याकरणिक विवेचना के साथ केलॉग ने हिन्दी की कुछ लिपियों का परिचय भी दिया है :- नागरी, कैथी, महाजनी और मिनियौटी

6. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

अवधी का विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। इसका प्रयोग क्षेत्र अयोध्या के आसपास का है। मध्यकाल में सूफी काव्यधारा में पहली बार अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में हुआ।

साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी के विकास के पीछे तीन सुयोग हुए पहला अपभ्रंश से चली आ रही 'दोहा-चौपाई' की कड़वक-बद्ध शैली अवधी के लिए रूढ़ हो गयी और दूसरा संस्कृत से प्रचलित लोक आख्यानों यथा उषा-अनिरुद्ध कथा, उर्वशी-पुरूरवा आख्यान आदि की रचना अवधी में होने लगी और तीसरा सूफी कवियों ने अपने रहस्यवादी सिद्धांतों की अभिव्यक्ति के लिए लोकआख्यानों को अवधी में ढालकर अपनी रहस्यानुभूति को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

साहित्यिक रूप देने लगे।

इस संबंध में पहली रचना 'मुल्ला दाउद' की 'चंदायन' है। चंदायन की भाषा लोकमाधुर्य से युक्त 'ठेठ अवधी' है। इसने एक अर्थ में अवधी को लोकभाषा से साहित्यिक भाषा बना दिया। चंदायन का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

"दाउद कवि जो चांदा गाई
जोई रे सुना सो गा मुरझाई"

इस परंपरा में अगली रचना कुतुबन की मृगावती है। पर सूफी काव्य में अवधी का चरम साहित्यिक विकास 'मलिक मुहम्मद जायसी' के हाथों हुआ। उनकी पद्मावत, अखरावट, कन्हावत जैसी रचनाएँ ठेठ अवधी की साहित्यिक मिठास के साथ साहित्यिक उत्कर्ष से युक्त है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर...

दृष्टि The Vision

पद्मावत इस दृष्टि से उल्लेखनीय है जिसमें अवधी भावुकता, मार्मिकता, लयात्मकता और प्रवाह के साथ-साथ लोकतत्त्व का सफल प्रयोग और शिल्प की दृष्टि से बिंब आदि का चरम निदर्शन प्रस्तुत करती है।

इसमें जायसी ने लोक जीवन में प्रयुक्त 'महवर चीर' 'दुबंमर' जैसे शब्द तो प्रयुक्त किए ही हैं। जनजीवन के मुहावरों, लोकोक्तियों का सुन्दर प्रयोग किया है। यथा- 'सूखी अंगुरीन निकसै घिउ' और 'हृय फटा'

पद्मावत में जायसी का 'बिम्ब कौशल' भी प्रशंसनीय है।

"जेठ जरै जग बहै लुवारा, उठै बवण्डर धिकै पहारा
चारिहु पवन झकोरै आगि, लंका दाहि पलंका लागि"

आचार्य शुक्ल ने जायसी की भाषा की प्रशंसा करते हुए कहा है कि- "जायसी की

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 .. www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाषा बहुत ही मधुर है × × × अवधी की
खातिर बेमेल मिठास के लिए पद्मावत का नाम
बराबर लिया जाएगा।"

आगे अवधी का प्रयोग नूर मुहम्मद की
'अनुराग बांसुरी', उसमान की 'चित्रावली' में
भिन्न तेवर के साथ प्रयुक्त हुयी है।

समग्रतः मध्यकाल में अवधी के
विकास में ~~जायसी का~~ सूफी काव्यधारा
का महत्व प्रशंसनीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वाधीनता आंदोलन के समय राष्ट्रभाषा हिंदी
के प्रचार प्रसार में तमिलनाडु का महत्वपूर्ण
स्थान है।

1918 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में मद्रास
में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की बात
उठी। इस हेतु महात्मा गांधी ने स्वयं अपने
पुत्र देवदास गांधी को भेजा। उनके
सहायतार्थ अनेक नेता और हिंदी विद्वान
मद्रास गये।

तमिलनाडु के विभिन्न नेताओं यथा
सी. राजगोपालाचारी, नरसिंह अय्यर, वैद्यनाथ
अय्यर आदि ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में
सहयोग किया।

तमिलनाडु में सर्वप्रथम त्रिचुरापल्ली

हिंदी प्रचार का केन्द्र बना। बाद में मदुरै आदि यहाँ हिंदी प्रचार केन्द्र बने।

1922 तक यह कार्य इतना विस्तृत हो गया की ब्रेक बोलना पड़ा। 1927 में मद्रास हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुयी और यह दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार का मुख्य केन्द्र बनकर उभरा।

स्थानीय नेताओं के प्रयास से बहुत से लोगों को हिंदी सिखायी गयी। हिंदी जल्द ही नगरपालिका स्कूलों और जिला बोर्ड स्कूलों में पढ़ाई जाने लगी। हिंदी परीक्षाओं में अनेक बच्चे बैठने लगे।

वहाँ के नेताओं और हिंदी के प्रचार के लिए दूसरे भागों से गये नेताओं तथा हिंदी प्रचारकों ने मिलकर तमिलनाडु में हिंदी प्रचार-प्रसार का अभूतपूर्व कार्य किया।

समग्रत! हम कह सकते हैं कि स्वतन्त्रता आंदोलन में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में तमिलनाडु का अविस्मरणीय योगदान है।

Gr A
9/15

दृष्टि The Vision

(ग) व्याकरण के धरातल पर हिंदी की विभिन्न बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 15

हिंदी की सभी ~~बोलियों~~ बोलियों का विकास संस्कृत की एक साझी विरासत से हुआ है। पर यह विकास विस्तृत भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ है। इसलिए बाहरी रंग रूपों में भिन्नता के बावजूद सभी बोलियाँ आंतरिक संबंधों में समानता रखती है। इस संबंध की व्याकरणिक विशेषताएँ निम्न हैं।

व्याकरणिक धरातल पर संबंध :

① संज्ञा व कारक व्यवस्था : संज्ञा तत्व में अद्भुत समानता है। कारक के स्तर पर कर्ता के लिए परसर्ग रहित प्रयोग प्राय: सभी बोलियों में मिलते हैं। इसी तरह कर्म, संप्रदान कारकों में 'क' तत्व की समानता मिलती है।

दृष्टि The Vision

② सर्वनाम : हिंदी की प्राय: सभी बोलियों में कमोबेश समान सर्वनाम प्रयुक्त होते हैं।

जैसे -

उत्तम पुरुष → 'मैं', 'म्हार', 'म्हारो', 'मोहि'

मध्यम पु → 'तू', 'तुम्हार', 'तुम्हारा', तुम

अन्य पु० → 'वै', 'वे', 'वोहि', वो आदि

3. विशेषण : विशेषणों में भी प्राय: समानता है। जैसे संख्यावाचक 'विशेषण' समान है। भाववाचक और विशेषता वाचक विशेषणों में स्थानीय प्रभाव के बावजूद समानता है।

उदा० हरियाणी → 'उचों'

अवधी → 'ऊँचा'।

④ क्रिया संरचना : क्रिया संरचना में वर्तमान के लिए 'ह' रूप और भविष्य के लिए 'ग' रूप प्राय: सभी बोलियों

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में मिल जाता है। भूत के लिए 'य' रूप 'य' रूप भी विभिन्न बोलियों में प्रचलित है।

स्पष्ट है व्याकरण के स्तर पर हिंदी की विभिन्न बोलियों में व्यापक अंतर्संबंध विद्यमान है।

9/15

इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)